प्राक्कथन

युग प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिंदी साहित्य जगत के एक सफल एवं अद्‌वितीय साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य की हर विधा में अपने व्यक्तित्व की अमीट छाप छोड़ी है। महाकवि प्रसाद पर तो बहुत कुछ लिखा गया है किंतु नाटककार प्रसाद हिंदी के आलोचकों की उपेक्षा के विषय बने हुए हैं। प्रसाद जी के नाटकों की समीक्षा आवश्य हुई है।किंतु उनके नाटकों का अध्ययन पिटी-पिटाई तथ्यों के अधारपर हुआ है। जो सदोष भी माना गया है । यही कारण है कहीं प्रसाद जी की अत्याधिक प्रशंसा की गई है तो कहीं उनके दोषों को उभरकर दिखाया गया है।

जयशंकर प्रसाद जी के नाटकों मे राष्ट्रीयता एवं मातृभूमी के प्रति अनन्य प्रेम तथा अतीत संस्कृति की महत्ता का चित्रण हुआ है। प्रसाद जी ने भारत के अतीत संस्कृति की महानता बताने के लिए ऐतिहासिक कथानक को चुनना उचित समझा ।यही कारण है कि उनके अधिकांश नाटक ऐतिहासिक हैं। 'कामना' और 'एक घूँट' के अतिरिक्त अन्य सभी नाटक ऐतिहासिक हैं। 'कामना' और 'एक घूँट' प्रतीकात्मक सामाजिक नाटक हैं।

विषय चयन -

प्रसाद के नाटक पढ़ने से पूर्व मैंने नाटककार श्री विष्णु प्रभाकर, मोहन राकेश, शंकर शेष, भारतेंदु, लक्ष्मीनारायण मिश्र, लक्ष्मीनारायण लाल आदि नाटककारों की नाट्य कृतियों को पढ़ा। उसके पश्चात् प्रसाद जी का एकांकी नाटक 'एक घूँट' पढ़ा और उससे प्रभावित होकर उनके अन्य नाटक पढ़ने के लिए प्रेरित हुआ । प्रसाद जी के चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, 'कामना' आदि नाटकों को पढ़ने से उनके सामाजिक नाटकों का अनुशीलन करने की जिज्ञासा मेरे मन में उत्पन्न हुई । इस दृष्टि से मैंने मार्गदर्शक और विभाग अध्यक्ष महोदय जी से संपर्क किया। उनसे विचार विर्मश करने के पश्चात मैंने "जयशंकर प्रसाद के 'कामना' और 'एक घूँट' नाटकों का अनुशीलन" इस विषय का चयन किया। 'कामना' और 'एक घूँट' इन दो नाटकों को लेकर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य आज तक नहीं किया गया । विवेच्य नाटकों के पठन के पश्चात अनुशीलन के पूर्व विवेच्य कृतियों को लेकर मेरे मस्तिष्क में निम्न प्रश्न उपस्थित हुए -

१ 'कामना' और 'एक घूँट' इन नाटकों का उद्‌देश क्या है?
२ प्रसाद जी अपने उद्‌देश में कहाँ तक सफल हुए हैं?
३ विवेच्य नाटयकृतियों में चित्रित समस्याएँ कौनसी हैं?

४ विवेच्य नाटयकृतियों का 'कामायनी' महाकाव्य के साथ क्या संबंध है ? कैसे?

५ विवेच्य नाटयकृतियों का तत्कालीन और समकालीन क्या महत्व है ?

अनुसंधान की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है -

प्रथम अध्याय - "जयशंकर प्रसाद जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

किसी भी साहित्यिक कृति के साम्यक अनुशीलन के लिए रचनाकार के व्यक्तित्व का अध्ययन आवश्यक होता है। इस अध्याय में मैंने जयशंकर प्रसाद जी के जीवन परिचय के अंतर्गत-जन्म, मातापितादि वंशपरिचय, बचपन, वैवाहिक जीवन,शिक्षा तथा ज्ञानार्जन, दिनचर्या, मित्रगोष्टी, विभन्न यात्राएँ और महाप्रयान आदि का विवेचन किया है। तथा इसी अध्याय के अंतर्गत प्रसाद जी के व्यक्तित्व और साहित्यिक कृतित्व का परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय -
" 'कामना' और 'एक घूँट' नाटकों का नाटक के तत्वों के आधारपर अनुशीलन"

किसी भी साहित्य कृति के मौलिक तथ्यों के अन्वेषण हेतु संबंधित साहित्य कृति को तत्वों के आधारपर परखना आवश्यक होता है। इस दृष्टि से अनुसंधान की सुविधा के मद्देनज़र इस अध्याय में क्रमशः 'कामना' और 'एक घूँट' का-कथावस्तु, प्रतिपाद्य, पात्र या चरित्र चित्रण , कथोपकथन या संवाद, भाषाशैली, गीत विधान, दृश्य विधान, रंगमंचियता और अभिनेयता आदि तत्वों के आधारपर विवेचन एवं विश्लेषण किया है। इस विवेचन एवं विश्लेषण के कारण मुझे प्रसाद जी के विवेच्य नाटकों मे स्थित विचार मानसिक एवं सृजनात्मक भूमिका कों जानने सहायता मिली है।

तृतीय अध्याय- " 'कामना 'और 'एक घूँट' मे चित्रित समस्याएँ "

वस्तुतः विवेच्य दोनों नाटक प्रतीकात्मक सैद्धांतिक नाटक होते हुए भी उनमें समसामायिक समस्याओं का चित्रण हुआ है।क्योंकि 'कामना' नाटक है और 'एक घूँट' एकांकी। तो एकांकी की अपेक्षा नाटक में अधिक समस्याओं का चित्रण होना स्वाभाविक है।दूसरी ओर 'एक घूँट' में चित्रित समस्याएँ 'कामना' में भी चित्रित हैं । इसलिए अनुसंधान की सुविधा की दृष्टि से इस अध्याय को मैंने दो भागों में विभाजित किया है-

१ 'कामना' में चित्रित समस्याएँ -जिसके अंतर्गत स्वर्णलालसा, मदिरा सेवन , प्राकृतिक जीवन के ह्रास ,पाश्चात्य भौतिकवादी प्रवृति के अनुकरण, भारतीय- संस्कृति के पतन, युद्ध, राजनीतिक अराजकता, अतृप्त कामना, राष्ट्र-प्रेमाभाव आदि समस्याओं का विवेचन किया है।

२ 'कामना' और 'एक घूँट' में चित्रित समस्याएँ - इसके अंतर्गत स्वच्छंद प्रेम, एकनिष्ठ प्रेम, पारिवरिक संघर्ष, मानसिक संघर्ष आदि समस्याओं का विवेचन किया है।

चतुर्थ अध्याय "'कामना' और 'एक घूँट' 'कामायनी' की पूर्वपीठिका "

अनुसंधान के पूर्व मैं एम्. ए. की कक्षा में 'कामायनी' का अध्यायन कर चुका था। अनुसंधान हेतु जब मैंने 'कामना' और 'एक घूँट' का अध्ययन किया, तब मैंने विवेच्य कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन करने का संकल्प किया । इस अध्ययन के पश्चात मुझे कुछ सूत्र मिलें जिनके आधारपर मैंने 'कामना'और'एक घूँट' 'कामायनी' की पूर्वपीठिका "इस तथ्य की स्थापना की । इस तथ्य को विवेचित करने तथा अनुसंधान की सुविधा की दृष्टि से इस अध्याय को मैंने निम्नलिखित भागों में विभाजित किया है- १) 'कामना'और 'कामायनी' में साम्य-भेद

२) 'एक घूँट'और 'कामायनी' में साम्य-भेद

३) 'कामना' और 'एक घूँट'- 'कामायनी' की पूर्वपीठिका - इसके अंतर्गत - रचनाकाल , प्रतीकात्मकता, प्रेम -निरूपण, शैवदर्शन और आनंदवाद, नियतिवाद, का चित्रण, ह्रदय और बुद्धि का संघर्ष एवं समन्वय,भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति, काव्य रूप , 'कामना' और 'एक घूँट' की परिपक्व एवं महाकाव्यात्मक अभिव्यक्ति -'कामायनी' आदि सूत्रों के परिप्रेक्ष्य में विवेचन किया है।

पंचम अध्याय – "'कामना' और 'एक घूँट ' की प्रासंगिकता "

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य नाटकों की तत्कालीन और समकालीन भूमिका एवं महत्व को स्पष्ट किया है। अनुसंधान की सुविधा की दृष्टि से इस अध्याय में मैंने सर्व प्रथम तत्कालीन परिस्थितियों का विवेचन किया है। उसके पश्चात तत्कालीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में विवेच्य कृतियों की प्रासंगिकता को विवेचित किया है।च्युंकि इन कृतियों के अध्ययन, विवेचन-विश्लेषण के समकालीन महत्व को विशद करने हेतु ,विवेच्य नाटकों की आज के संदर्भ में आवश्यकता को स्पष्ट करने हेतु - विवेच्य कृतियों की समकालीन प्रासंगिकता का विवेचन किया है।

षष्ठम् अध्याय- 'उपसंहार '

इस अध्याय में विवेच्य सभी अध्यायों के निष्कर्ष एवं प्रस्तुत शोध कार्य की उपलब्धियों को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ – इसके अंतर्गत प्रसाद के साहित्य पर स्वतंत्र रूप से जिन विषयोंपर अनुसंधान कार्य किया जा सकता है, ऐसे विषयों की सूची दी है।

संदर्भ ग्रंथ सुची – इसके अंतर्गत प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के लेखन कार्य में सहायक, समिक्षा ग्रंथ,अधार ग्रंथ, संदर्भ शब्द-कोश तथा पत्र - पत्रिकाओं की सूची दी गयी है ।

ऋणनिर्देश

(कृतज्ञता ज्ञापन)

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लेखन कार्य में जिनसे मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ,जिन्होंने मुझे यथासमय प्रोत्साहित किया उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

सर्व प्रथम मैं उन समस्त लेखकों के प्रति अभार प्रकट करता हूँ, जिनकी रचनाओं का प्रयोग मैंने सदर्भ ग्रंथ के रूप में किया है। साथ ही प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लेखन कार्य में मुझे मार्गदर्शन करनेवाले श्रद्धेय डॉ.मोहन जाधव जी और यथास्थान सहयोग करनेवाले आपके परिवारजनों के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

साथ ही आदरनिय गुरूवर्य विद्यमान हिंदी विभाग -अध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, भूतपूर्व हिंदी विभाग अध्यक्ष - डॉ. पांडूरंग पाटील जी, डॉ. के. पी. शहा जी, डॉ. मनियार मॅडम जी, श्री.कदम जी और श्री. एल. आर. पाटील जी का साक्षात्कार मुझे लाभदायक सिद्ध हुआ। उनके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

जिन्होंने शिक्षा दी, जिनकी प्रेरणा और शुभार्शिवाद के फलस्वरूप मैं सतर्कता एवं सजगता से शोध - कार्य कर सका वे हैं - मेरे पुज्य पिताजी जनाब हुसेन चाँदसो शेख और स्नेहशील माताजी सौ.रहिमा शेख। मेरी शोध साधना के मूल प्रेरक मेरे माता पिताजी का ऋण चुकाने के लिए यह जीवन अधूरा है। साथ ही भाई हुमायुन की शुभकामना और प्रोत्साहन मुझे शोध-कार्य की दृष्टि से फलदायी रहा है।

हमेशा से मेरे शुभ चिंतक रहे -जनाब बादशाहभाई, ज.जहाँगिरभाई, ज.युन्नुसभाई (खरसुंडी), ज.रज्जाकसाहब (बार्शी), ज.बाबासाहबजी, ज.बकसअल्ली (श्रीपत पिंपरी) , ज.नूरमहंमद साहब, ज.आय्युब साहब , ज.महंमदअल्ली साहब (मोहोळ), ज.याकुबसाहब(मायणी) और उनके सभी परिवारजनों का मैं ऋणी हूँ।

हिंदी विभाग के सहयोगी एवं शुभचिंतक मित्र - सुभाष, रशिद, जितेंद्र, चौखंडे, संदिप, डवरी जी तथा अनामिका अनुपमा, सुजाता, समिना, स्वाती, निर्मला और शैलेजा आदि का मैं हार्दिक आभारी हूँ। साथ ही बाल्यकालसे मेरे सहयोगी एवं शुभचिंतक रहे मित्र -दिपक, प्रताप, बालेखान घनःशाम, संजय, गणेश, धिरज,खरात बंधु,दिनकर,विजय और धनाजी का मैं आभारी हूँ। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को सही रूप में टंकन करनेवाले आर.टीं .एस.कॉम्प्युटर्स, खरसुंडी का मैं आभारी हूँ। साथ ही स्थानाभाव के कारण जिनका नामोल्लेख न कर सका उन सभी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोगी एवं शुभचिंतकों का मैं ऋणी हूँ।